आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय शास्त्री सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांकः-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 23-05-2016 ● अंक- 533 ● तारीख - 24 मई 2016, ज्येष्ठ कृष्ण - 3 ● मंगलवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ-02 ● मूल्य-1 रूपया ● पृष्ठ-01

अनमोल वचन (सत्यसाई बाबा)

मानव मूल्य

सत्य, धर्म, शांति व प्रेम के बिना विद्वत्ताओं का चयन केवल मात्र शुष्क निष्फल उपलब्धि है। इसके अभाव में सभी दान–पुण्य तथा दूसरों के प्रति की गई सेवाएं व्यर्थ हैं। मनुष्य द्वारा प्राप्त अधिकार–युक्त पदवियां इनके बिना उपद्रवी या विद्रोही पदवियां बन जाती हैं। **–श्री सत्य साई बाबा**

जीवन के सात सुख

पहला सुख नीरोगी काया,
दूजा सुख घर में हो माया।
तीजा सुख सुलक्षणा नारी,
चौथा सुख पुत्र आज्ञाकारी।
पांचवां सुख स्वदेश में बासा,
छट्टा सुख राज में पासा।
सांतवां सुख संतोषी जीवन,
ऐसा हो तो धन्य हो जीवन।

चौपाई

श्री गुरु चरन सरोज रज
निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु
जो दायकु फल चारि।।

भावार्थ:–श्री गुरुजी के चरण कमलों की रज से अपने मन रूपी दर्पण को साफ करके मैं श्री रघुनाथजी के उस निर्मल यश का वर्णन करता हूँ, जो चारों फलों को (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को) देने वाला है।

कीड़े कर रहे ताज महल की दीवारों को हरा

जो यमुना नदी ताज महल के लिए वरदान थी, अब अभिशाप बन रही है। नदी में गंदगी से कीड़े हो गए हैं। ये ताज की सफेद संगमरमर पर बैठकर हरा रंग का स्राव छोड़ रहे हैं। इससे यमुना की तरफ बनी ताज की दीवार का रंग हरा होने लगा है। कीड़ों की पहचान काइरोनोमस के रूप में हुई है।

– यमुना में पानी बहुत कम है। उसमें आगरा शहर का कचरा डाला जाता है। इस वजह से ताज के पीछे पानी ठहर–सा गया है।

– इसका पानी सड़ रहा है। इसमें बड़े पैमाने पर काइरोनोमस कीड़ा पनप रहा है।

– ये कीड़े ताज के सफेद संगमरमर पर बैठकर गंदगी छोड़ रहे हैं। इससे ताज का संगमरमर हरा हो रहा है।

– यमुना की तरफ बनी ताज की दीवार का रंग हरा होने लगा है।।

– इंसेक्ट विशेषज्ञ डॉ. गिरीश माहेश्वरी का मानना है कि यमुना

में प्रदूषण बढ़ने से गोल्डी काइरोनोमस की संख्या तेजी से बढ़ रही है।

– यमुना में पैदा होने वाले ये कीड़े ताज के सतह की ओर आकर्षित होकर इसे अपने फीकल मैटर से गंदा कर रहे हैं। ये कीड़े क्लोरोफिल का सेवन करते हैं।

– भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) ने कई बार हरे रंग को साफ किया, लेकिन कीड़े बार–बार आकर संगमरमर को हरा कर दे रहे हैं।

उत्तम सेवा ?

भगवान महावीर अपने मुख्य शिष्य गणधर गौतम के साथ उपदेश हेतु ग्राम ग्राम में भ्रमण कर रहे थे। एक बार गणधर गौतम ने भगवान महावीर से पूछा –'भगवान दो व्यक्ति हैं, उनमें से एक व्यक्ति हमेशा आपकी भक्ति एवं उपासना में लगा रहता है, फलतः जन सेवा के लिए कुछ समय नहीं निकाल पाता। जबकि दूसरा व्यक्ति दीन–दुःखी पीड़ित जनता की सेवा में ही जुटा रहता है, उसे आपकी भक्ति उपासना करने का समय ही नहीं मिलता। मैं पूछना चाहता हं कि इन दोनों में कौन उत्तम है, कौन अधिक श्रेय का अधिकारी है? "भगवान महावीर नेू कहा– गौतम ! वह जो जन–सेवा का काम करता है ?" गौतम ने पुनः प्रश्न किया "भगवान् यह कैसे ? क्या आपकी भक्ति कुछ नहीं ?" भगवान महावीर ने समाधान करते हुए कहा–गौतम ! मेरी भक्ति का अर्थ यह नहीं कि मेरा नाम रटा जाय, मेरी पूजा अर्चना की जाये। मेरी भक्ति, मेरी आज्ञा का पालन करने में है और मेरी आज्ञा है–प्राणी मात्र को यथोचित सुख, सुविधा एवं शान्ति पहुंचाना।

सफलता का प्राकृतिक नियम

सफलता का एक नियम "अल्प प्रयास का नियम" है। यह नियम इस तथ्य पर आधारित है कि प्रकृति प्रयत्न रहित सरलता और अत्यधिक आजादी से काम करती है। यही अल्प प्रयास यानी विरोध रहित प्रयास का नियम है।

प्रकृति के काम पर ध्यान देने पर पता चलता है कि उसमें सब कुछ सहजता से गतिमान है। घास उगने की कोशिश नहीं करती, स्वयं उग आती है। मछलियां तैरने की कोशिश नहीं करतीं, खुद तैरने लगती हैं, फूल खिलने की कोशिश नहीं करते, खुद खिलने लगते हैं और पक्षी उड़ने की कोशिश किए बिना स्वयं ही उड़ते हैं। यह उनकी स्वाभाविक प्रकृति है। इसी तरह मनुष्य की प्रकृति है कि वह अपने सपनों को बिना किसी कठिन प्रयास के भौतिक रूप दे सकता हैं।

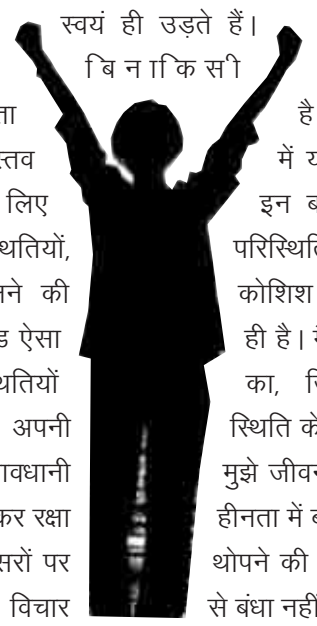

मनुष्य के भीतर कहीं हल्का सा विचार छिपा रहता है जो बिना किसी प्रयास के मूर्त रूप ले लेता है। इसी को सामान्यतः चमत्कार कहते हैं लेकिन वास्तव में यह अल्प प्रयास का नियम है। अल्प प्रयास के नियम का जीवन में आसानी से पालन करने के लिए इन बातों पर ध्यान देना होगा – मैं स्वीकृति का अभ्यास करूंगा। आज से मैं घटनाओं, स्थितियों, परिस्थितियों और लोगों को जैसे हैं। वैसे ही स्वीकार करूंगा, उन्हें अपनी इच्छा के अनुसार ढालने की कोशिश नहीं करूंगा। मैं यह जान लूंगा कि यह क्षण जैसा है, वैसा ही होना था क्योंकि सम्पूर्ण ब्रह्मांड ऐसा ही है। मैं इस क्षण का विरोध करके पूरे ब्रह्मांड से संघर्ष नहीं करूंगा, मेरी स्वीकृति पूर्ण होगी। मैं उन स्थितियों का, जिन्हें मैं समस्या समझ रहा था, उनका उत्तरदायित्व स्वयं पर लूंगा। किसी दूसरे को अपनी स्थिति के लिए दोषी नहीं ठहराऊंगा। मैं यह समझूंगा कि प्रत्येक समस्या में सुअवसर छिपा है और यही सावधानी मुझे जीवन में स्थितियों का लाभ उठाकर भविष्य संवारने का मौका देगी। मेरी आज की जागृति आगे चलकर रक्षा हीनता में बदल जाएगी। मुझे अपने विचारों का पक्ष लेने की कोई जरूरत नहीं पडेगी। अपने विचारों को दूसरों पर थोपने की जरूरत भी महसूस नहीं होगी। मैं सभी विचारों के लिए अपने आपको स्वतंत्र रखूंगा ताकि एक विचार से बंधा नहीं रहूं।

कर्मो से श्रेष्ठ होता है व्यक्ति

एक संपन्न व्यक्ति प्रसिद्ध स्वाधीनता सेनानी गोखले जी से मिलने पहुँचा। उन्हें अपना फटा कुर्ता सिलते देख वह बोला – "आप जैसा महान नेता कपड़े सिलने में अपना समय नष्ट क्यों कर रहा है ?" गोखले जी ने उत्तर दिया –"मैंने अपनी पाई–पाई बचाकर देश की स्वाधीनता हेतु हो रहे प्रयासों में लगाने का संकल्प लिया है तो यहाँ बचे हुए पैसे उसी कार्य में इस्तेमाल होंगे। साथ ही सुंदर कपड़े पहनकर कोई महान नहीं बनता, व्यक्ति के कर्म उसे श्रेष्ठ बनाते हैं। जहाँ तक स्वयं यह कार्य करने का प्रश्न है तो कोई कार्य छोटा–बड़ा नहीं होता।" ये शब्द सुनकर वह व्यक्ति नतमस्तक हो गया।

भगवान महावीर ने कहा - दानी का हाथ सदैव ऊपर रहता है

मनुष्य भव की विशेषताएं गिनना शुरू करें, तो उसका कोई पार न आए। इसमें भी दान देने की विशेषता तो मात्र मनुष्य को ही प्राप्त हुई हैं देने की इस विशेषता के कारण ही वह चारों गतियों में श्रेष्ठ गिना गया है। देने का सामर्थ्य मात्र मनुष्य को ही मिला है। अन्य किसी गति के जीव को यह अहोभाग्य नहीं मिला है। प्रभु महावीर कहते हैं कि दान देने वाले भक्त का हाथ ऊपर ही रहता है। दान देने से कीर्ति यश प्राप्त होता है। वह अमर होता है। वह हमेशा टिके, ऐसा होता है। शालिभद्र और जगडू शाह जैसे दानदाताओं को आज भी याद किया जाता है। भामाशाह के नाम को काल का कभी जंग लगा ? ऐसे कभी समाचार मिले। सुबह का सूरज उदय हो, उसके पहले उसका स्मरण किया जाता है। इसी प्रकार दाता का नाम भी प्रातः स्मरणीय होता है।

सामने के सिरे पर देखें तो 'कृपण' यह मनुष्य के लिए बड़ी गाली जैसा कलंक है। ऐसे व्यक्ति का कोई नाम लेना भी पसंद नहीं करता। जिसे प्रतिदिन कुछ न कुछ चाहिए, कुछ न कुछ लेता ही है। उससे सभी दूर भागते हैं। जबकि जो प्रतिदिन कुछ न कुछ देकर खुश होता है–दान करता है, वह महान बनने लायक है। ऐसे उदार स्वभाव वाले का तो, बिना दान के दिन बीते तो–आज का दिन व्यर्थ गया। ऐसा मानता है। ऐसा व्यक्ति श्रेष्ठ मनुष्य तो है ही, और पुनः मनुष्य भव प्राप्त करने की योग्यता उसमें है, ऐसा कहा जाता है। जो चाहिए वह बांटो–बांट दो, वह दुगुना होकर वापस मिलेगा, ऐसा कहा गया है। जो देते हैं वहीं लौटकर वापस आता है। गुजराती भाषा में कहा जाता है–आपो तेवु पामो अने वावो तेवुं लणो। जैसा दोगे वैसा मिलेगा, जैसा बोओगे वैसा उगेगा। यह बात कौन नहीं जानता ? धरती को एक दाना देते हैं उसमें से हम अनेक दाने वापस प्राप्त करते हैं। इससे दान का नियम सिद्ध होता है। खबर है, गरीबों को मात्र याचक नहीं, किन्तु बोध दाता के रूप में नवाजा जाता है। कहा है –

याचका नैवयाचन्ते, बोध यन्ति गृहे गुहे।
दीयंता –दीयंता दानमदातुः कलमीदृशम्।। अर्थात् याचक (भिखारी) केवल आपसे याचना ही नहीं करता है, किन्तु इसके साथ घर–घर में यह बोध भी प्रदान करता है कि भिक्षा दो, नहीं दोगे तो, तुम भी मेरे जैसे बनोगे।

–आचार्य प्रद्युम्न सूरिश्वर

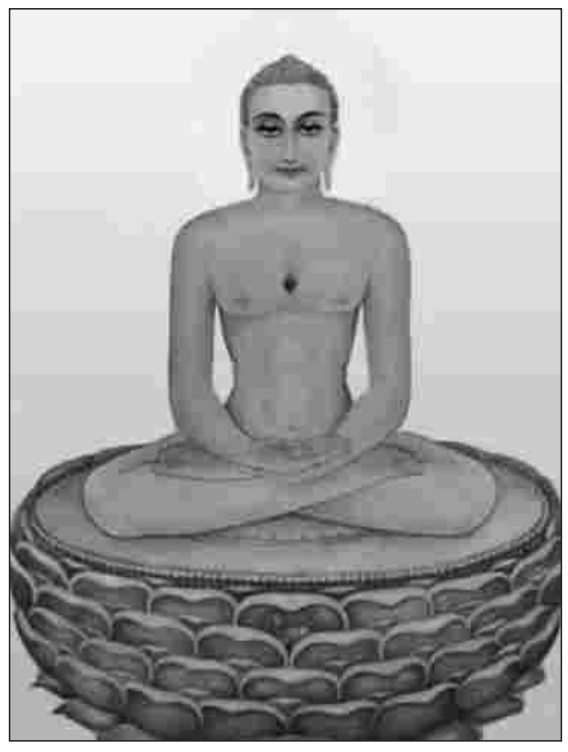

मानव मन के बोल

वसुधैव कुटुम्बकम के भावों के साथ

गतांक से आगे.....

एक महान् व्यक्ति रमेशचन्द्र जी अग्रवाल जिन्होंने छोटे रूप में दैनिक भास्कर समाचार पत्र प्रारम्भ किया। आज भास्कर समाचार पत्र पूरे विश्व में फैला हुआ है, बहुत बड़ी सँख्या में निकलता है। कितने एडिशन हैं।

तो मैं आपको निवेदन कर रहा था कि जब मैं सिरोही था। और सिरोही को, मैं अपनी कर्म भूमि मानता हूँ। प्रतिदिन हॉस्पीटल जाना, नया अनुभव होना, हमारे एक शर्मा जी थे, पूरणमल जी शर्मा। उनके बारे में प्रसिद्धि थी कि उनके लिये पैसा खर्चा करना बहुत कठिन होता है। आदतें पड़ जाती है–महाराज! खर्च नहीं करने की भी आदत, अधिक खर्च करने की भी आदत, वो भी ठीक नहीं है, अप व्यय भी नहीं होना चाहिए, मितव्यय होना चाहिए। तो मित व्यय में जब बहुत ज्यादा कंजूसी आ जाती है तो माइनस पॉईन्ट आ जाता है। सजगता, जहाँ खर्च करना, करना चाहिए। जहाँ एक रूपया भी खर्च नहीं करना है, वहाँ नहीं करना चाहिए। तो उन्होंने मुझे एक दिन पूछा भाई साहब, आप रोज–रोज कहाँ जाते हो? मैंने कहा हॉस्पिटल जाता हूँ, रोगियों से मिलता हूँ। कल रामलाल जी मिले, परसों पूरणमल जी मिले, धानूलाल जी मिले और देखो उनका दिल खुश हो जाता है। ये देखो गीता प्रेस की पुस्तकें आनन्द से ले रहे हैं। प्रहलाद है, भक्तराज विभीषण की कथा है। राम चरित मानस के उत्तम दोहे हैं –

अजर अमर गुननिधि सुत होहू,
करहुँ बहुत रघुनायक छोहू।।
करहुँ कृपा प्रभु अस सुनि काना।
निर्मल प्रेम मगन हनुमाना।।(42)

मैं खो जाता हूँ इन चार पंक्तियों में, अजरता का वरदान, जिसकी लोग तपस्या करते हैं कि बुढ़ापा ना आवे। शंकर भगवान की तपस्या कर रहे हैं, एक पैर पर खड़े हैं, आहार नहीं किया, 12–12 महीने धूप, गर्मी, सर्दी, सबके थपेड़े सहन किए, फिर भी तपस्या कर रहे हैं। हे प्रभु, मैं बूढ़ा नहीं हो जाऊँ, ऐसा वरदान दे दो। वो वरदान भी सीता जी ने दे दिया, अजर हो जाओ। अजर मतलब बुढ़ापा नहीं आवे। रेल चली भई रेल चली, इस जीवन की रेल चली।

क्रमश अगले अंक में ...

विरोधी मित्र

अपने विरोधी हमें शत्रु जैसे दिखाई देते हैं और उसके प्रति हमारे मन में कटु भावना जागृत होती है, जिससे हम अशांत बन जाते हैं। परंतु हमें स्वस्थता से जीवन व्यवहार चलाना हो और अपने कार्य में वेग देना हो तो हमें अपनी दृष्टि बदल लेना चाहिए। भर्तृहरि जी ने कहा है –

जीवन्तु मे शत्रुगणाः सदैव,
येषां प्रसादेन विचक्षणोऽहम्।
यदा–यदा मा भजते प्रमादं,
तदा–तदा ते प्रतिबोधयन्ति।।

मेरे शत्रुओं के समूह सदैव जीवित रहें। क्योंकि उन्हीं की कृपा से मैं विलक्षण बना हुआ हूं। वस्तुतः जब जब मुझे प्रमाद घेर लेता है, तब तब वे मुझे जगाते हैं। वस्तुतः हमारा विरोधी हमारा शत्रु है ही – यह हम समझ लें क्या ?नहीं, वह हमारा सजग मित्र है, जो हम पर सदैव सुतीक्ष्ण दृष्टि रखता है। जिसे हम प्रमाद के कारण नहीं देख पाते हैं, हमारी उस त्रुटि को वह बतलाता है। कटु औषधि कौन देंता है ? हितैषी ही न ! हम जागें। हम अपनी भूल सुधारें। भूल न हो तो भी सावधान हो जाये और आगे भूल न हो जाए –इसका ध्यान रखें। विरोधी के प्रति हम मैत्री भाव रखकर चलें। उससे लाभ ही होगा।

अपना चित्त स्वस्थ रहेगा, अपना कार्य बिगड़ेगा नहीं औरसमय आने पर विरोधी भी छत्तीस से त्रेसठ की स्थिति में आ सकेगा। किसी से विचार भेद होने से उसे हम शत्रु नहीं माने और न विरोधी ही मानें। परस्पर कदाचित विरोध की स्थिति आ जाए तो विरोध, विरोध के लिए न रहे। विरोधी के उत्तम विचारों का स्वागत करें और उसके अच्छे कार्यों की प्रशंसा करें। मिलने का प्रसंग आ जाए तो प्रसन्नता से मिले तथा वह व्यवहार से यही समझे कि मैं मित्र से मिल रहा हूं।

जिन्दगी एक सागर

जिन्दगी सागर के भाँति है। सागर में कभी ज्वार तो कभी भाटा। कभी लहरों के वेग के कारण सागर जल–तरंगे उछलने लगती हैं तो कभी सागर एकदम शांत और गंभीर हो पड़ता है। हमारी जिन्दगी भी सागर की तरह ही है। इनमें भी कभी चढ़ाव तो कभी उतार आते ही रहते हैं। कभी अनुकूलताएं तो कभी प्रतिकूलताएं, कभी सुख तो कभी दुःख, कभी संपत्ति का पार नहीं तो कभी विपत्तियों की सीमा नहीं, कभी जंगल तो कभी मंगल, कभी लाखों सलाम करने वाले मिलते हैं तो कभी कोई सामने देखने वाला भी नहीं होता। ऐसी विचित्रताओं और विविधताओं से उफनती जिन्दगी में जो अपने चित्त को समतोल रख कर प्रसन्न रह सकता है। वही व्यक्ति जीवन के वास्तविक आनन्द को पा सकता है। सुख–दुःख, अनुकूलता–प्रतिकूलता आदि सब कुछ कर्माधीन हैं, किन्तु जब मनुष्य अपने कर्म के विचार का भूल का निमित्त को प्रधान बना देता है, तब उसकी जिन्दगी आर्तध्यान की आग में झुलसने लगती है। यदि बचानाहै अपनी जिन्दगी को आर्तध्यान की आग से तो हम दुःख के हर प्रसंग में निमित्त का गौण कर कर्म को मुख्य बनाना सीखें।

सम्पादकीय

आप स्वयं को आदर तभी दे पाएँगे, जब आप यह जान पाएँगे कि मैं कौन हूँ? 'मुझे अपने आपको जानना चाहिए, तभी मैं खुश रह पाऊँगा वरना मेरा विकास कैसे होगा?' आप में स्वयं के प्रति आदर है तो आप जल्द से जल्द सत्य जानना चाहेंगे। स्वयं का आदर करना बहुत मुख्य बात है क्योंकि लोगों के साथ अच्छे व्यवहार की शुरूआत यहीं से होती है। स्वयं को आदर देने वाला इंसान गलतियों से बचने का रास्ता ढूँढ़ना चाहेगा। वह कभी नहीं चाहेगा कि उसकी आजादी छिन जाए। वह हर काम बिना गलती के करना चाहेगा।

इंसान जब पहले अपने आपको आदर देना सीखेगा तभी वह दूसरों को भी आदर दे पाएगा, लेकिन शुरूआत में ही उसका मूल अहंकार नहीं टूटेगा। शुरू में ही कोई अपने आपको नहीं जान सकता । स्वयं के प्रति आदर है तो शुरूआत कुछ अच्छी बातों को विकसित करने से होगी। जैसे– ' मुझे अच्छी शिक्षण पद्धति ग्रहण करनी चाहिए... मुझे सही लोगों के साथ उठना – बैठना चाहिए क्योंकि मैं अपने आपको दुनिया की बेहतरीन चीजें देना चाहता हूँ। मगर इसमें भी सूक्ष्मता है क्योंकि यहाँ आदर, अहंकार में बदलने की संभावना होती है।

यदि दूसरों को आदर देते–देते सामने वाले ने आपको चोट पहुँचाई तो उसके प्रति नफरत शुरू होने की संभावना है, जो आदर के बिल्कुल विपरीत है। यह नफरत आपके अहंकार को चोट पहुँचने की वजह से उत्पन्न होगी। इसमें यह भी धोखा है कि अब आप चिढ़कर कहेंगे, 'आदर अभी बाजू में रखो, पहले उसे सबक सिखाया जाए।'

इस तरह कब आदर अहंकार में घुल–मिल जाता है आपको पता ही नहीं चलता। पहले जब कोई सुनता है कि अहंकार नहीं रखना चाहिए तो वह अपने प्रति आदर भी कम कर देता है। तब उसे कहा जाता है कि ' आदर कम मत करें, यह आगे सेल्फ रियलाइजेशन में काम आएगा। आप किसी से न कम हैं न ज्यादा हैं। आप जो भी है उसे आदर देना शुरू करें। स्वयं को आदर देते–देते आप सत्य के करीब पहुँच जाएँगे।' आदर ही घृणा और अहंकार को तोड़ने में मदद करता है। इसलिए सही ढ़ंग से अपने आपको आदर दें, यह आत्म सम्मान है, स्वयं का सच्चा सम्मान है।

बिखरे हुए कल्याणकारी अमूल्य हीरे-मोती

1. जैसे पानी को कपड़े से छानकर पीते हैं वैसे ही प्रत्येक शब्द की सत्य से छानकर बोलो।
2. जैसे कीड़ा वस्त्रों को वैसे ही ईर्ष्या मनुष्य को नष्ट कर देती है।
3. सागर की अपेक्षा शराब ने अधिक मनुष्यों को डुबोया है।
4. इन्सान वैसे ही बन जाता है जैसे उसके विचार होते हैं।
5. अच्छे विचार रखना भीतरी सुन्दरता है और स्वर्ग की दिशा का श्रीगणेश।
6. जब क्रोध नम्रता का रूप धारण कर लेता है तब अहं भी सिर झुका लेता है।
7. एक सूर्य ही धन्य है जिसका सारा प्रयास परहित करने के लिए ही है।
8. आत्मा का स्थान हृदय में होता है, जिसमें विश्व का कर्ता निवास करता है, इस लिए किसी के दिल को मत दुःखाओ।
9. मनुष्य जैसा सोचता है, वैसा बन जाता है और जैसा करता है, वैसा फल पाता है।

बने को सब बनाते हैं, बिगडे को बनाये वही संत हैं

उज्जैन।सेक्टर 5 मंगलनाथ क्षैत्र, जय भोलेनाथ खालसा में सिंहस्थ कुंभपर्व में आयोजित नारायण सेवा संस्थान कुम्भ खालसा के तत्वावधान में श्रीमद् भागवत कथा', संस्थान अध्यक्ष डॉ. श्री प्रशान्त जी अग्रवाल ने बताया की पूज्या स्तुती बेन के मुखारविन्द से कथा में तृतीय दिवस का श्रवण पान कराते हुये। ध्रुव चरित्र में सुनीति व सुरूची का वर्णन किया किस प्रकार माता सुनीति अपने पुत्र को भगवान नारायण की भक्ति करने का सद्मार्ग बताया अतः सच्चे मन से अटल भक्ति करोगे तो ध्रुव लोक प्राप्त होगा और मोह,माया की चाहा हैं तो उतम साधन प्राप्त होंगे। असुर वृत्तासुर का उद्धार, ऋषि दधिचि ने अपनी शरीर को त्याग कर अस्थि दान दी जिससे ब्रज बनाकर इन्द्र देव ने वृत्तासुर का प्राणान्त किया।संचालन श्रीकृपा व्यास ने किया।

संत का चरित्र कपास की तरह और हृदय मक्खन की तरह होना चाहिए

संस्थान के संस्थापक आचार्य महामण्डलेश्वर 1008 पद्मश्री अलंकृत साधु कैलाश जी मानव ने बताया कि मंगलनाथ क्षैत्र नारायण धाम खालसा में श्रीमद् भागवत कथा जगद् गुरू रामदिनेशा चार्य जी महाराज ने अमृतमयी भागवत कथा का रसपान कराते हुये अजामिल उद्धार श्रवण करते हुये बताया एक बार संत उनके घर भोजन के लिए आये उनहे पता चला की अजामिल का वैश्या से संबंध हैं सभी संतो ने भोजन के लिए मना कर दिया लेकिन उन संतो के समुह में उनके साथ जो सबसे बडे थे उन्होने कहाँ '' बने को सब बनाते हैं, बिगडे का बनाये वही संत हैं।'' संत का चरित्र कपास की तरह कोमल व हृदय मक्खन की तरह निर्मल होना चाहिए। सभी संतो ने भोजन कर उनकी पत्नि से कहाँ कुछ मांगो। संत ने कहा अपने पुत्र का नाम नारायण रखना ।अंत समय जब यमदूत अजामिल को लेने आये तो उसने नारायण–3 अपने पुत्र को पुकार लेकिन भगवान ने अपने नाम मात्र उच्चारण से उसका उद्धार कर दिया। महाराज ने कहाँ ब्राह्मण,संत व गुरू का अपमान नहीं करना चाहिए।

इस तरह हुआ था नृसिंहावतार

हिरण्याक्ष के वध से उसका भाई हिरण्यकशिपु बहुत दुखी हुआ और वह भगवान का घोर विरोधी बन गया। उसने अजेय बनने की भावना से कठोर तप किया। इसके परिणामस्वरूप उसे देवता, मनुष्य या पशु आदि से न मरने का वरदान मिल गया और यह वरदान पाकर वह अजेय हो गया।

हिरण्यकशिपु का शासन इतना कठोर था कि देव–दानव सभी उसके भय से उसके चरणों की वंदना करते रहते थे। भगवान की पूजा करने वालों को हिरण्यकशिपु कठोर दंड देता था। उसके शासन से सब लोक और लोकपाल घबरा गए। जब उन्हें और कोई सहारा न मिला तब वे भगवान की प्रार्थना करने लगे। देवताओं की स्तुति से प्रसन्न होकर नारायण ने हिरण्यकशिपु के वध का आश्वासन दिया। दैत्यराज का अत्याचार दिनों–दिन बढ़ता ही गया। यहां तक कि वह अपने ही पुत्र प्रह्लाद को भगवान का नाम लेने के कारण तरह–तरह से कष्ट देने लगा।

प्रह्लाद बचपन से ही खेलकूद छोड़कर भगवान के ध्यान में तन्मय हो जाया करते थे। वह भगवान के परम प्रेमी भक्त थे। समय–समय पर असुर बालकों को उपदेश देने की बात सुनकर हिरण्यकशिपु बहुत क्रोधित हुआ। उसने प्रह्लाद को दरबार में बुलाया। प्रह्लाद बड़ी विनम्रता से हाथ जोड़कर चुपचाप दैत्यराज के सामने खड़े हो गए। उन्हें देखकर दैत्यराज ने डांटते हुए कहा, मूर्ख ! तू बड़ा उद्दण्ड हो गया है। तूने किसके बलबूते पर निडर की तरह मेरी आज्ञा के विरूद्ध काम किया है ?

प्रह्लाद ने कहा, पिताजी ! ब्रह्मा से लेकर तिनके तक सब छोटे–बड़े, चर–अचर जीवों को भगवान ने ही अपने वश में कर रखा है। वही परमेश्वर अपनी शक्तियों के द्वारा इस विश्व की रचना, रक्षा और संहार करते हैं। आप अपना यह आसुरी भाव छोड़ दीजिए और अपने मन को सबके प्रति उदार बना लीजिए।

प्रह्लाद की बात सुनकर हिरण्यकशिपु का शरीर क्रोध के मारे थर–थर कांपने लगा। उसने प्रह्लाद से कहा, रे मंदबुद्धि ! तेरे बहकने की अब हद हो गई है। यदि तेरा भगवान हर जगह है तो बता इस खंभे में क्यों नहीं दिखता ? यह कहकर वह क्रोध से तमतमाया हुआ हिरण्यकशिपु स्वयं तलवार लेकर सिंहासन के नीचे कूद पड़ा और उसने बड़े जोर से उस खंभे को एक घूंसा मारा। उसी समय उस खंभे के भीतर से नृसिंह भगवान प्रकट हो गए। उनका आधा शरीर सिंह का और आधा मनुष्य के रूप में था। क्षण मात्र में ही लीलाधारी नृसिंह भगवान ने हिरण्यकशिपु की जीवन–लीला समाप्त कर दी और अपने प्रिय भक्त प्रह्लाद की रक्षा की।

कब व कैसे करें भोजन

कौनसा भोजन कब और कैसे करें, यह डायटिशियन तो अब बताते हैं लेकिन शास्त्रों में भोजन को लेकर कई तरीके बताए गए हैं जिनसे स्वास्थ्य पर सकारात्मक और नकारात्मक असर भी पड़ता है। खाना खाते समय यदि कुछ बातों का ध्यान रखा जाए तो स्वास्थ्य लाभ के साथ ही ईश्वरीय कृपा भी प्राप्त की जा सकती है। उदाहरणार्थ पूर्व और उत्तर दिशा की और मुंह करके भोजन ग्रहण करना चाहिए। इस उपाय से हमारे शरीर को भोजन से मिलने वाली ऊर्जा पूर्ण रूप से प्राप्त होती है। दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके भोजन ग्रहण करना अशुभ माना गया है। पश्चिम दिशा की ओर मुंह करके भोजन करने से रोगों की वृद्धि होती है। भोजन के पूर्व दौनों हाथा, दौनों पैर और मुख को अच्छी तरह से धो लेना चाहए। इसके बाद ही भोजन करना चाहिए। भीगे हुए पैरों के साथ भोजन ग्रहण करना बहुत शुभ माना जाता है। भीगे हुए पैर शरीर के तापमान को नियंत्रित करते हैं, इससे पाचन तंत्र ठीक रहता है और भोजन आसानी से पचता है। मान्यता है कि कभी भी बिस्तर पर बैठकर भोजन नहीं करना चाहिए। खाने की थाली को हाथ में लेकर भोजन नहीं करना चाहिए और भोजन बैठकर ही ग्रहण करना चाहिए। थाली को किसी बाजोट या लकड़ी के पाटे पर रखकर भोजन करना चाहिए। बर्तन साफ हों और टूटे फूटे ना हों, इसका ध्यान करें। देवी–देवताओं को भोजन हेतु धन्यवाद देते हुए भोजन ग्रहण करें। कभी भी परोसे हुए भोजन की निंदा नहीं करनी चाहिए।

व्यवहार है जीवन का राजमार्ग

(मानव धर्म शृंखला का चतुर्थ (4) पुष्प)

गतांक से आगे....

क्रोध का बोध–जीवन का शोध

झगड़े को सुलझाना पत्ता...वरूण देवता धर्म का अर्थ, क्रोध नही जवानी क्या ?

आपकी जो उपासना पद्धति है, आप नमाज अदा करो, आप गीता जी का अध्ययन करो, आप यज्ञ जरूर कीजिये। आप यज्ञोपवीत को धारण कीजिये, आप तिलक भी लगाइये। धर्म का अर्थ है – धर्म इति धार्यते, धर्म का अर्थ है – शान्ति, धर्म का अर्थ है – क्रोध नहीं करना, धर्म का अर्थ है – झूठ नहीं बोलना, धर्म का अर्थ है – लोभ नहीं करना, धर्म का अर्थ है – षड़यन्त्र नहीं करना, धर्म का अर्थ है – मन को निर्मल रखना, धर्म का अर्थ है – मीठी वाणी बोलना, धर्म का अर्थ है – सत्संग करना, धर्म का अर्थ है – सुख में उदारता, धर्म का अर्थ है – दुख में त्याग। सुख में उदार बनाओ प्रभु , हमें दुख में त्यागी बनाओ, ताकि सुख–दुख के बन्धनों से आजाद होकर रहें! हे! परमात्मा, हे! ब्रह्म देवता, हे! कृपा नाथ, हे विष्णु भगवान, हे! गौलोक वासी, हे! अन्तर्यामी, हे! कृष्ण भगवान, हे! मुरारी, हे! श्रीराम, हे! कपिल भगवान, हे! भगवान महावीर स्वामी, हे! भगवान बुद्ध देव, आपकी कृपा से हम विकारों से दूर रहे, हमारी ईर्ष्या छूटे, हमारे विकार टूटे, हम सब को एक समझें, हम परमात्मा को सब कुछ समझें, जो कुछ करवा रहा है, परमात्मा करवा रहा है, ये शरीर तो जाना– आना है। ये जवानी जो जाकर ना आये, उसे जवानी कहते हैं, जो आकर ना जाये, उसे बुढ़ापा कहते हैं । ये जीवन तीन घण्टे का पेपर है। ये बचपन चला गया, ये जवानी भी चली गई, बुढ़ापा आ गया, अब यदि भगवान का काम नहीं करेंगे, तो कब करेंगे ?अब यदि दान नहीं करेंगे तो कब करेंगे ? अब यदि आप क्षमा नहीं करोगे तो कब करोगे ? यदि विद्या अध्ययन नहीं करोगे तो कब करोगे ? दया धर्म का मूल है, अपनी–अपनी ज्ञानेन्द्रियों का सदुपयोग करें और आगे की कथा में नृसिंह भगवान की जय–जयकार करें।

बोलें नृसिंह भगवान की – जय

महिम जी –

कविता

ये सत्य का पुराण है, ये सत्य की कथा है।
ये कर्म का पुराण है, ये कर्म की कथा है।
और गूढ़ अर्थ धर्म का, मानवजी कह रहे।
ये धर्म का पुराण है, ये धर्म की कथा है।
बोलिये सेवा धर्म की जय।(49)

गुरूजी –

हमारे महिम जी उपासना पद्धति से जैन धर्म को अपनाते हैं लेकिन अपने चरित्र से अपने रोम–रोम की तरंगो से, अपने करोड़ों उत्तकों से, अपने पाचनतंत्र, आपके हमारे श्वसन तंत्र, आपका हमारा उत्सर्जन तंत्र, आपका हमारा अस्थितंत्र, आपका हमारा धमनियों और नसों का तंत्र, बार–बार कहता है सत्यता, प्रेम, उत्साह, उमंग, वाणी का प्यार, मोहब्बत ये ही धर्म के लक्षण हैं। बोलिये धर्म के लक्षणों की जय।

महिम जी – एक बार की बात है, मनुज जी और उनके दोनों पुत्र अपने व्यवहार और व्यवसाय के कार्य से घर से बाहर, परदेश गये हुए थे। घर में मात्र महिलाए थी, मनुजी की पत्नी और उनकी बहुए धैर्यकुमारी व प्रेमकुमारी थी। वहाँ का वातावरण बहुत अच्छा था व आनन्द से उनका जीवन गुजर रहा था। जब ये बात कुलदागी व उसके पुत्रों को पता चलती है कि उनके घर में कोई भी पुरूष नहीं है, तो ये लोग मनुज जी के घर में महाभारत रचने के लिये षड्यंत्र रचते हैं। अभी मानवजी कह रहे थे कि षड़यंत्र नहीं रचना चाहिए, पर कुलदागी जी तो अपनी आदतों से परेशान। तो उसने एक साधु का वेश धारण किया, नकली दाढ़ी, नकली मूंछें, ये सभी साधु वेश के सामान बाजार से खरीदे और वेश बदल कर मनुज जी के घर में जाता है। वहाँ कहता है, मुझे अन्न चाहिए। जब अन्न देने के लिए मनुज जी की पत्नी बाहर आती हैं तो कहता है – पुत्री मैं तुम्हारा भविष्य बता सकता हूँ , इस प्रकार वह उनके घर में बैठ जाता है। अब वो ये कहता है कि मैं एकांत में सबको भविष्य बताऊँगा। सबसे पहले मनुजजी की पत्नी आती हैं तो वह हाथ देखकर कहता है कि आपका भावी जीवन बहुत खतरे में है।

क्रमशः

मुख्य कार्यकारी अधिकारी–कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक–प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका–कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक–मोहन लाल गाडरी
संपादक–लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी–घनश्याम सिंह राठौड़

मुद्रक–न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक–कमलादेवी, मुद्रण स्थल–13, भोपा मगरी, बी.एम.एन.एल. एक्सचेंज के पास, लिण मगरी, सेक्टर–3 उदयपुर (राज.), प्रकाशन स्थल– ई–डी–71 बप्पा रावल नगर, लिण मगरी, सेक्टर–6, उदयपुर (राज.)
सम्पादक–लक्ष्मीलाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 टेलिफोन नं. – 0294–6622222 मो.–09587720000,09928022275,09214657807,09785039524 www.mannkijeet.com, mankijeet2015@gmail.com